Lesson 28 - PRK Abhyasam 4 - Friday July 7th, 2023

(**RECORD)**

पठामि संस्कृतं नित्यं वदामि संस्कृतं सदा ध्यायामि संस्कृतं सम्यक् वन्दे संस्कृतमातरम्

Om Ayim Sriim Hriim Saraswati Devyai Namaha

ओम ऐम् श्रीम् ह्रीम् सरस्वती देव्यै नमः

What are the benefits of chanting Saraswati mantra?

a. Doing regular chanting of Saraswati mantra improves your speech, memory and concentration in study.
b. She removes your ignorance and refines your character by giving you good qualities like humility and culture.
c. Saraswati Mantra gives you control over your speech, knowledge and wisdom.
d. By chanting this mantra of saraswati maa with dedication, a student can pass his exam with good marks.
e. Chanting Saraswati Mantra helps poets, writers and folk speakers to reach new heights of achievements.
f. Close your eyes in contemplation and rub your hands together and then open your palms and say the karagre vasatir Lakshmi prayer

https://youtu.be/YuKtKR3r0oM

(ख) कृ (करना), अस् (होना)।(२)। (ग) इत्थम् (ऐसे), तथा (वैसे), यथा (जैसे), कथम् (क्यों, कैसे), अपि (भी), न (नहीं), च (और), एव (ही)।(८)।(घ) एकः (एक), द्वौ (दो), त्रयः (तीन), चत्वारः (चार), पञ्च (पाँच), षट् (छः), सप्त (सात), अष्ट (आठ), नव (नौ), दश (दस)।(१०)

व्याकरण (कृ, अस्, लट्; कारक-परिचय)

१. कृ (करना) लट्

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र०	पु०
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म०	पु०
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ०	पु०

२. अस् (होना लट्

अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र०	पु०
असि	स्थः	स्थ	म०	पु०
अस्मि	स्वः	स्मः	उ०	पु०

२. संस्कृत में सम्बोधन को लेकर ८ विभक्तियाँ (कारक) होती हैं। उनके नाम, कारक-नाम और चिह्न ये हैं। इन्हें स्मरण कर लें।

विभक्ति		कारक	(कारक-चिह्न)
(१) प्रथमा	(प्र०)	कर्ता	—, ने
(२) द्वितीया	(द्वि०)	कर्म	को
(३) तृतीया	(तृ०)	करण	ने, से, द्वारा
(४) चतुर्थी	(च०)	संप्रदान	के लिए
(५) पंचमी	(पं०)	अपादान	से
(६) षष्ठी	(ष०)	सम्बन्ध	का, के, की

कारक नाम (Cont'd)

(७) सप्तमी	(स०) अधिकरण	में, पर
(८) सम्बोधन	(सं०) संबोधन	हे, अये, भोः

नियम ६—संस्कृत में 'च' (और) का प्रयोग एक शब्द के बाद कीजिये। अर्थात् हिन्दी में जहाँ 'और' लगता है, संस्कृत में 'च' एक शब्द के बाद में लगेगा। जैसे फल और फूल—फलं पुष्पं च। फलं च पुष्पम्, अशुद्ध है। इसी प्रकार रामः कृष्णः च, बालकः बालिका च, प्रयोग करें।

अभ्यास ४

१. उदाहरण-वाक्यः—१. अत्र एकः बालकः अस्ति । २. अत्र द्वौ मनुष्यौ स्तः । ३. अत्र त्रयः नृपाः सन्ति । ४. चत्वारः ग्रामाः ५. पञ्च पुस्तकानि । ६. षट् पुष्पाणि । ७. सप्त बालिकाः । ८. अष्ट गृहाणि । ९. नव विद्यालयाः । १०. दश पाठशालाः । ११. सः किं करोति ? १२. स पठति । १३. त्वं किं करोषि ? १४. अहं भोजनं करोमि । १५. सः अपि अत्र एव पठति ।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. वह है। २. वे दोनों वहाँ हैं। ३. सब बालक यहाँ हैं। ४. तू कहाँ है? ५. तुम दोनों यहाँ हो। ६. तुम सब कहाँ हो? ७. मैं बालक हूँ। ८. हम दोनों भी यहाँ ही हैं। ९. हम सब मनुष्य हैं। (ख) १०. वह क्या करता है? ११. वे सब भोजन करते हैं। १२. तू क्या करता है? १३. तुम सब क्या करते हो? १४. मैं भोजन करता हूँ। १५. हम राज्य करके हैं। (ग) १६. ईश्वर एक ही है। १७. दो बालक फूल सूँघते हैं। १८. तीन आदमी खाना खाते हैं। १९. चार बालक आ रहे हैं। २०. पाँच पुस्तकें और पाँच फूल यहाँ हैं। २१. छः बालिकाएँ इस प्रकार पढ़ रही हैं। २२. सात बालक भी यहीं पढ़ते हैं। २३. आठ पाठशालाएँ यहाँ हैं। २४. नौ फूल वहाँ हैं। २५. दस आदमी गाँव को जा रहे हैं।

सम्स्कृत बनाओ

(क)

१। वह है। - **सः अस्ति।**

२। वे दोनों वहां हैं। **तौ तत्र स्तः।**

३।सब बालक यहां हैं। **सर्वे बालकाः अत्र सन्ति।**

४। तू कहां है। **त्वं कुत्र असि।**

५। तुम दोनों यहां हो। **युवाम् अत्र स्थः।**

सम्स्कृत बनाओ

६। तुम सब कहां हो। **यूयं कुत्र स्थ।**

७। मैं बालक हूं। **अहं बालकः अस्मि।**

८। हम दोनों भी यहां ही हैं। **आवां अपि अत्र एव स्वः।**

९। हम सब मनुष्य हैं। **वयं सर्वे मनुष्याः स्मः।**

१०।

सम्स्कृत बनाओ

(ख)

१०। वह क्या कर्ता है। **सः किं करोति।**

११।वे सब भोजन कर्ते हैं। **ते सर्वे भोजनं कुर्वन्ति।**

१२।तू क्या कर्ता है। **त्वं किं करोषि।**

१३। तुम सब क्या कर्ते हो। **यूयं किं कुरुथ।**

१४। मैं भोजन कर्ता हूं। **अहं भोजनं करोमि।**

१५। हम राज्य कर्ते हैं। **वयं राज्यं कुर्मः।**

सम्स्कृत बनाओ

(ग)

१६। ईश्वर एक ही है। **ईश्वरः एकम् एव (एकमेव) अस्ति।**

१७। दो बालक फूल सूंघते हैं। **द्वौ बालकौ जिघ्रतः।**

१८। तीन आदमी खाना खाते हैं। **त्रयः मनुष्याः भोजनं खादन्ति।**

१९। चार बालक आरहे हैं। **चत्वारः बालकाः आगच्छन्ति।**

२०। पांच पुस्तकें और पांच फूल यहां हैं। **पञ्च पुस्तकानि पञ्च पुष्पाणि च अत्र सन्ति।**

सम्स्कृत बनाओ

२१। छः बालिकाएं इस प्रकार पढ रहे है।**षट् बालिकाः इत्थम् पठन्ति।**

२२। सात बालक भी यहीं पढते हैं। **सप्त बालकाः अपि अत्र एव पठन्ति।**

२३। आठ पाठ्शालाएं यहां हैं। **अत्र अष्ट पाठशालायाः सन्ति।**

२४। नौ फूल वहां हैं। **नव पुष्पाणि तत्र सन्ति।**

५। दस आदमी गांव को जा रहे हैं। **दश मनुष्याः ग्रामम् गच्छन्ति।**

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) तौ अस्ति । त्वम् अस्ति ।	तौ स्तः । त्वम् असि ।	१
(२) तौ कुर्वन्ति । अहं करोपि ।	तौ कुरुतः । अहं करोमि ।	१
(३) चत्वारः वालकाः आगच्छति ।	चत्वारः वालकाः आगच्छन्ति ।	१
(४) पञ्च पुस्तकानि च पुष्पाणि ।	पञ्च पुस्तकानि पुष्पाणि च ।	६

४. शुद्ध करो—तौ सन्ति। ते अस्ति। अहम् अस्ति। त्मम् अस्मि। ते करोति। त्वं करोति। अहं करोपि। वयं करोमि।

५. अभ्यास—(क) १ से १० तक की गिनती के १० वाक्य वनाओ। (ख) अस् और कृ के लट् के रूप लिखो। (ग) विभक्ति और कारकों के नाम तथा उनके चिह्न वताओ।

६. रिक्त स्थान भरो—(लट् लकार) १. सः अत्र (अस्)। २. अत्र (अस्)। ३. त्वम् (अस्)। ४. अहम् (अस्)। ५. न किं (कृ)? ६. त्वं किं (कृ)?

सुभाषितम्

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थं इदं शरीरम् । ।

Trees bear fruit for the benefit of others
and rivers flow for the benefit of others
Cows milk for the benefit of others,
and this body is for the benefit of others. .

CLOSING PEACE PRAYER

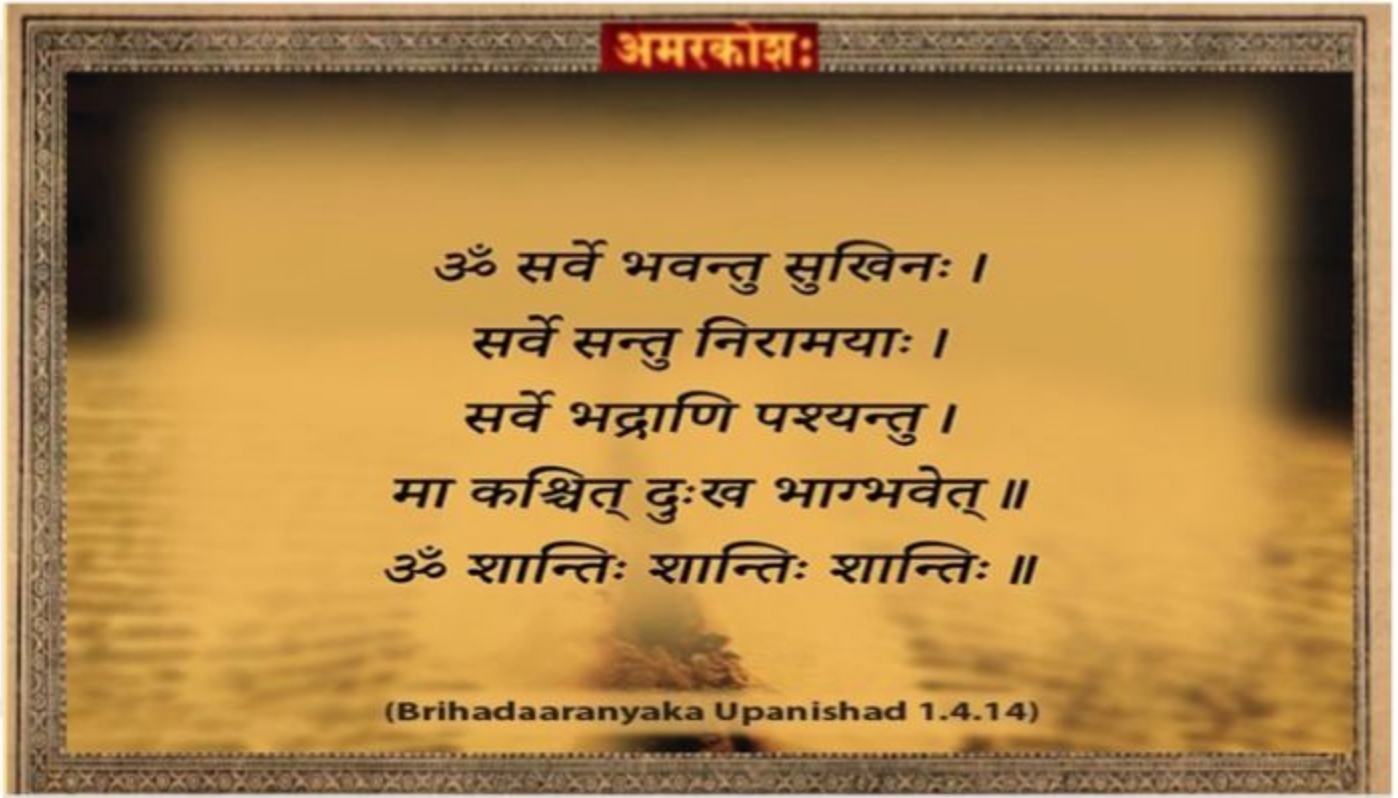

नियमाः

नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे, सः पठति। कर्ता प्रथमपुरुष एकवचन है, अतः क्रिया भी प्र० पु० एक० है।

नियम २—तीनों लिंगों में धातु का रूप वही रहता है।

नियम ३—कर्ता में प्रथमा होती है और कर्म में द्वितीया।

नियम ४ - द्वितीय फाठः

नियम ४— (अपदं न प्रयुञ्जीत) बिना प्रत्यय लगाये किसी शब्द या धातु का प्रयोग न करें। (शब्द के अन्त में जुड़ने वाले अः, औ, आः आदि तथा धातु के अन्त में जुड़ने वाले अति, अतः, अन्ति आदि को प्रत्यय कहते हैं।) अन्त में बिना कुछ प्रत्यय लगाये गृह, पुस्तक, भोजन, पठ्, रक्ष् आदि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। गृहम्, पुस्तकम्, पठति आदि का ही प्रयोग होगा।

४. **वर्णमाला**—कोष्ठ में पारिभाषिक नाम हैं, इन्हें स्मरण कर लें।

(क) **स्वर**— अ, इ, उ, ऋ, ऌ, (ह्रस्व) ए, ऐ, ओ, औ (मिश्रित)
आ, ई, ऊ, ॠ, (दीर्घ)

(ख) **व्यंजन**—क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग), च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग)
ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग), त, थ, द, ध, न, (तवर्ग)
प, फ, ब, भ, म (पवर्ग), य, र, ल, व, (अन्तःस्थ)
श, ष, स, ह (ऊष्म), अनुस्वार, ँ (अनुनासिक)
: (विसर्ग)

सूचना—वर्ग के प्रथम (१) अक्षर का अर्थ है—क च ट त प। द्वितीय (२) —ख छ ठ थ फ। तृतीय (३)—ग ज ड द ब। चतुर्थ (४)—घ झ ढ ध भ। पंचम (५) | ङ ञ ण न म। संधि-नियमों के लिए ये संकेत स्मरण रखें।

अभ्यास ३

नियम ५ - अच्हीनं परेण संयोज्यम्) हल् व्यंजन आगे के स्वर से मिल जाता है। (यह नियम ऐच्छिक है) । जैसे—अहम् + अद्य = अहमद्य । त्वमिदानीम् ।

अभ्यास ४

नियम ६—संस्कृत में 'च' (और) का प्रयोग एक शब्द के बाद कीजिये। अर्थात् हिन्दी में जहाँ 'और' लगता है, संस्कृत में 'च' एक शब्द के बाद में लगेगा। जैसे फल और फूल—फलं पुष्पं च। फलं च पुष्पम्, अशुद्ध है। इसी प्रकार रामः कृष्णः च, बालकः बालिका च, प्रयोग करें।

CLOSING PEACE PRAYER